Lord Surya Mantra Sadhana

भगवान् सूर्यमंत्र साधना

Gurudev Raj Verma

Contact- +91-9897507933, +91-7500292413(WhatsApp No.)

Email- mahakalshakti@gmail.com

For more info visit---

www.scribd.com/mahakalshakti

www.gurudevrajverma.com

सूर्य नारायण ही कालचक्र के प्रणेता हैं। ये सभी ग्रहों के राजा हैं। इनके द्वारा ही दिन रात्रि, घटी, पल, मास, पक्ष, ऋतु, अयन, संवत्सर आदि का विभाग होता है। सूर्य ही जीवन, तेज, ओज, बल, यश, चक्षु, श्रोत्र, आत्मा और मन हैं- 'आदित्यो वै तैज ओजो बलं यशश्चक्षुः श्रोत्रे आत्मा मनः'। सूर्य के पिता कश्यप और माता अदिति कही जाती हैं। संज्ञा और छाया- ये दोनों भगवान् सूर्य की पत्नियां कही गयी हैं। भगवान् सूर्य सात छन्दोमय अश्वों से युक्त हैं। गरुड़ के छोटे भाई अरुण इनके सारथि हैं। भगवान् सूर्य की दस संताने हैं- विश्वकर्मा की पुत्री संज्ञा नामक पत्नी से वैवस्वत मनु, यम, यमुना, अश्विनी कुमारद्वय और रेवन्त तथा छाया से शनि, तपसी, भद्रा और सावर्णि मनु हुए हैं। ये आकाशमण्डल में प्रतिदिन नियम से सत्यमार्ग पर स्वयं घूमते हुए संसार का संचालन करते हैं। वेदों ने सूर्य के माहात्म्य को बतलाते हुए उसे समस्त जगत् की आत्मा कहा है- 'सूर्य आत्मा जगतस्तस्थुषश्च।' श्रीकृष्ण ने सूर्य और चन्द्रमा के भीतर विद्यमान तेज को अपना ही तेज बतलाया है- 'यच्चन्द्रमसि यच्चाग्नौ तत्तेजो विद्धि मामकम्।' शास्त्रों में सूर्य और चन्द्रमा को भगवान् का नेत्र भी कहा गया है। प्रत्यक्ष

देव की विधिवत् उपासना करने से दीर्घायु, आरोग्यता, मानसिक एवं शारीरिक बल, तेज, धनैश्वर्य, कीर्ति, विद्या, सौन्दर्य की प्राप्ति होती है एवं ग्रहपीड़ा से मुक्ति मिलती है। श्रीकृष्ण द्वारा अभिशप्त उनके पुत्र साम्ब ने अपने कोढ़ के रोग को सूर्यनारायण की कृपा से समाप्त किया था। इनकी उपासना से कुष्ठ-कोढ़ जैसे भयंकर रोग समाप्त हो जाते हैं, इसका प्रत्यक्ष प्रमाण साम्बोपाख्यान है।

भगवान् सूर्य ही दिन-रात के काल का विभाजन करते हैं। पंच देवताओं में सूर्य नारायण की गणना होती है (गणेश, विष्णु, शिव, दुर्गा, सूर्य)। जिनकी पूजा सर्वमंगल कार्यों में की जाती है। सूर्य भगवान् अन्य ग्रहों के साथ सम्पूर्ण ब्रह्माण्ड को प्रकाश एवं ऊर्जा प्रदान करते हैं। जिससे सम्पूर्ण सृष्टि का संचालन होता है। सभी प्राणियों को जन्म से ही भगवान् सूर्य के प्रत्यक्ष दर्शन होते हैं। अन्य किसी भी देवता की स्थिति में कोई संदेह हो सकता है, परंतु सूर्य भगवान् की सत्ता में कोई संदेह नहीं कर सकता है। इसलिये उनके उदय, मध्य एवं अस्ताचल के समय उनका अर्घ्य एवं मंत्रोपासना के साथ स्वागत-सत्कार करना चाहिये। सूर्य भगवान् प्रत्यक्ष देवता एवं ग्रहपति हैं, जो हमारे शुभ-अशुभ कर्मों के साक्षी देवता हैं।

इसलिये त्रिकाल संध्या में अपने इष्ट देवता के साथ सूर्यनारायण का भी संक्षिप्त पूजन अवश्य करना चाहिये।

जहां से सूर्य उदित होते हैं और जहां वे अस्त होते हैं उस प्राणात्मा में सम्पूर्ण देवता अर्पित हैं। उनका कोई भी उल्लंघन नहीं कर सकता। ये ही वह ब्रह्म हैं। (शतपथब्राह्मण)

वे ही अग्नि हैं, आदित्य हैं, वायु हैं, चन्द्रमा हैं, शुक्र हैं, परम ब्रह्म हैं तथा जलाधिपति वरुण और प्रजापति हैं- सब उन्हीं परमात्मा के नाम हैं। (शुक्लयजुर्वेद)

सूर्य नारायण की अनुपस्थिति में जैन मुनि भोजन भी नहीं कर सकते। नमस्कार संहिता, पौरिषी आदि प्रत्याख्यान के क्रम में काल की सीमा का निर्धारण सूर्योदय से किया जाता है। महाभारत युद्ध के समय संध्याकाल में कौरव-पाण्डव युद्ध का त्याग कर संध्यापूजन किया करते थे।

त्रिकाल संध्या :- प्रातःकालीन संध्या तारों के रहते सूर्योदय के समय श्रेष्ठ होती है। उषा की लाली से पूर्व ही स्नान करना उत्तम माना गया है। इससे प्राजापत्य फल प्राप्त होता है। मध्यकालीन संध्या के समय सूर्य भगवान् आकाश के शिखर पर आरूढ़ होते है तथा सायंकालीन संध्या तारों के दिखाई देने से

पूर्व जब सूर्य भगवान् लाल आभायुक्त अस्ताचल को प्रस्थान करते हैं, उत्तम होती है। प्रातःकाल सूर्यनारायण की ओर मुख करके जप करने से मनुष्य महाव्याधि के भय से मुक्त हो जाता है। उसका दारिद्रय नष्ट हो जाता है। मध्याह्न में सूर्य की ओर मुख करके जप करने से मनुष्य सद्यः उत्पन्न पांच महापातकों से मुक्त हो जाता है तथा त्रिकाल संध्या उपासना करने से मनुष्य भाग्यवान हो जाता है। एक वर्ष तक त्रिकालसंध्या उपासना करने वाला मनुष्य सैकड़ों यज्ञों का फल प्राप्त करता है। याज्ञवल्क्य स्मृति में कहा गया है- 'इस पृथ्वी पर जितने भी स्वकर्मरहित द्विज (ब्राह्मण, क्षत्रिय, वैश्य) हैं, उनको पवित्र करने के लिये ब्रह्माजी ने संध्या की उत्पत्ति की है। रात या दिन में जो भी अज्ञानवश विकर्म हो जायें, वे त्रिकालसंध्या करने से विनष्ट हो जाते हैं।' अत्रि ऋषि कहते हैं- 'नियमपूर्वक जो लोग प्रतिदिन संध्या करते हैं, वे पापरहित होकर सनातन ब्रह्मलोक को प्राप्त होते हैं।'

संध्या न करने से दोष :- जिसने संध्या का ज्ञान नहीं किया, जिसने संध्या की उपासना नहीं की, वह द्विज जीवित रहते शूद्र के समान रहता है और मृत्यु के बाद कुत्ते आदि की योनि प्राप्त करता है। (देवीभागवत)

ब्राह्मण, क्षत्रिय, वैश्य आदि संध्या नहीं करें, तो वे अपवित्र हैं और उन्हें किसी पुण्य कर्म के करने का फल प्राप्त नहीं होता। (दक्षस्मृति)

समय पर की गयी संध्या इच्छानुसार फल प्रदान करती है और बिना समय की गयी संध्या बंध्या स्त्री के समान होती है। (मित्रकल्प)

प्रातःकाल में तारों के रहते हुए, मध्याह्नकाल में जब सूर्य आकाश के मध्य में हों, सायंकाल में सूर्यास्त के पूर्व ही इस तरह तीन प्रकार की संध्या करनी चाहिये। (देवीभागवत)

प्रातःकाल में पूर्व की ओर मुख करके जब तक सूर्य का दर्शन न हो और सायंकाल में पश्चिम की ओर मुख करके जब तक तारों का उदय न हो, तब तक जप करते रहें। (याज्ञवल्क्यस्मृति)

शास्त्र-पुराणों में संध्यापूजन का अत्यन्त विस्तृत पूजन का उल्लेख मिलता है जिसे आज के व्यस्त भौतिक युग में सम्पन्न करना अत्यन्त कठिन प्रतीत होता है। इस कारण अधिकांश गृहस्थ साधक संध्यापूजन को या तो विधि के अभाव में अथवा समय के अभाव में सम्पन्न नहीं कर पाते। कई साधकों के आग्रह करने पर संध्या पूजन का संक्षिप्त, प्रभावी एवं सरल

विधान प्रस्तुत करने का प्रयास कर रहा हूं। जिस सत्युग में हमारे ऋषियों-मुनियों ने देवोपासना आदि कर्म तंत्रशास्त्र एवं पुराणों में समाहित किये थे, उस समय मनुष्य के पास आध्यात्म एवं मंत्रोपासना कर्म करने हेतु समय, आयु, बल एवं आरोग्यता की कोई समस्या नही होती थी, परंतु कलिकाल में इन सबका अत्यन्त अभाव है। अतः जिन साधकों के पास पर्याप्त समय या विधि उपलब्ध न हो तो उन्हें स्वकल्याण हेतु संक्षिप्त रूप से त्रिकाल मंत्रसंध्या को सम्पन्न कर लेना चाहिये, क्योंकि कुछ न करने से कुछ करना ही उत्तम होता है।

सर्वप्रथम साधक कुल परम्परानुसार गुरुमुख से दीक्षा एवं आज्ञा प्राप्त करे। साधक स्नानादि कर्म के पश्चात् पवित्र वस्त्र धारण कर, ग्रहमन्दिर में पूर्वाभिमुख बैठकर, धूप दीपक प्रज्जवलित कर, प्राणायाम एवं आचमनादि कर, गुरु सहित पंचदेवताओं एवं नवग्रहों को पुष्पादि अर्पित कर उनका संक्षिप्त पूजन करें। तत्पश्चात् सूर्य भगवान् का ध्यान करते हुए सूर्य गायत्री मंत्र की एक माला करे। 'ॐ आदित्याय विद्महे सहस्रकिरणाय धीमहि तन्नः सूर्यः प्रचोदयात्।' अथवा सूर्य मंत्र का जप करें। 'ॐ घृणिः सूर्य आदित्योम्।' इसके उपरान्त् रक्तपुष्प, चन्दन एवं केसर आदि युक्त अर्घ्य सूर्य भगवान् को गायत्री मंत्र से प्रदान

करना चाहिये। सुबह और दोपहर को एक एड़ी उठाये हुए खड़े होकर अर्घ्य देना चाहिये। सुबह कुछ झुककर खड़ा होवे और दोपहर को सीधे खड़े होकर तथा शाम को बैठकर अर्घ्य प्रदान करना चाहिये। नदी या सरोवर के अतिरिक्त पवित्र स्थान पर अर्घ्य दें, जहां पर वह किसी के पैर न लगें। अच्छा है किसी बर्तन में अर्घ्य देकर उसे वृक्ष के मूल में डाल दिया जाये। अर्घ्य प्रदान करते हुए सूर्यमण्डल में अपने इष्टदेवता के स्वरूप का ध्यान करना चाहिये। जो सूर्योपासक हो वह सूर्योपनिषद, आदित्य हृदय स्तोत्र अथवा ब्रह्म गायत्री का जप भी कर सकते हैं। सूर्य पूजन के साथ ब्रह्म गायत्री का जप भी किया जाता है, परंतु जो अन्य देवी देवता का उपासक हो, वह सूर्य पूजन के साथ अपने इष्ट देवता का ही मुख्यरूप से पूजन करे।

सूर्य नमस्कार – पूजा की तरह सूर्य के नमस्कारों का भी विशेष महत्व है। प्रणामों में साष्टांग प्रणाम का अधिक महत्व माना गया है। इससे शारीरिक व्यायाम भी हो जाता है। भगवान् सूर्य के एक नाम का उच्चारण कर दण्डवत् प्रणाम करें। फिर उठकर दूसरा नाम बोलकर दूसरा दण्डवत करे। इस तरह शीघ्रता न करते हुए भक्तिपूर्वक 12 नामों से 12 बार साष्टांग प्रणाम करें–

ॐ मित्राय नमः। ॐ रवये नमः। ॐ सूर्याय नमः। ॐ भानवे नमः। ॐ खगाय नमः। ॐ पूष्णे नमः। ॐ हिरण्यगर्भाय नमः। ॐ मरीचये नमः। ॐ आदित्याय नमः। ॐ सवित्रे नमः। ॐ अर्काय नमः। ॐ भास्कराय नमो नमः।

प्रातःकालीन श्रीसूर्य ध्यान :-

हंसारूढां सिताब्जे त्वरुणमणिलसद्भूषणां साष्टनेत्रां
वेदाख्यामक्षमालां स्रजमयकमलं दण्डमप्यादधानाम्।
ध्याये दोर्भिश्चतुर्भिस्त्रिभुवन जननीं पूर्वसंध्यादिवन्द्याम्।
गायत्रीमृक्सवित्रीमभिनव वयसं मण्डले चण्डरश्मेः।।
विश्वमातः सुराभ्यर्च्ये पुण्ये गायत्रि वेधसि।
आवाहयाम्युपास्त्यर्थमेह्येनोध्नि पुनीहि माम्।।

मध्याह्नकालीन श्रीसूर्य ध्यान :-

वृषेन्द्रवाहना देवी ज्वलत्त्रिशिखधारिणी।
श्वेताम्बरधरा श्वेतनागाभरणभूषिता।।
श्वेतस्रगक्षमालालंकृता रक्ता च शंकरा।

जटाधराधराधात्री धरेन्द्रांगभवाम्भवा।

मातर्भवानि विश्वेशि आहूतैहि पुनीहि माम्।।

सायंकालीन श्रीसूर्य ध्यान :-

संध्या सायन्तनी कृष्णा विष्णुदेवा सरस्वती।

खगगा कृष्णवक्त्रा तु शंखचक्रधरापरा।।

कृष्णस्त्रगभूषणैर्युक्ता सर्वज्ञानमयर वरा।

वीणाक्षमालिका चारुहस्ता स्मितवरानना।।

मातर्वाग्देवते स्तुत्ये आहूतैहि पुनीहि माम्।।

सूर्य का कुण्डली में प्रभाव- आत्मा, पिता, राजा, शरीर, शक्ति, मान-सम्मान, अधिकार, दाईं आंख, पद, अग्नि, वाहन, आत्मशक्ति, धन, आरोग्यता, चरित्र, सद्गुण, उदर, प्रशासनिक अधिकारी, हड्डियां, विद्या एवं हृदय आदि का विचार कुण्डली में सूर्य की स्थिति से किया जाता है।

रोग- गर्मी एवं जिगर से सम्बन्धित रोग, आखें विशेषतः दाईं, पागलपन, सिर से मुख तक मुख्य, दिल, मुंह से झाग आना, जीवन शक्ति न्यून होना, दांत आदि। जन्म कुण्डली में सूर्य

शनि या सूर्य राहु साथ हो या आमने सामने हो तो व्यक्ति जीवन में दुःखी रहता है। सूर्य से चौथे, आठवें, बारहवें शनि या राहु केतु होवे तो भी व्यक्ति को सामाजिक, आर्थिक कठिनाइयों का सामना करना पड़ता है। नेत्ररोग, चर्मरोग, कुष्ठरोग, अकस्मात् धोखा, घातयोग भी व्यक्ति को प्राप्त होते हैं। इनकी मंगल, चन्द्रमा और बृहस्पति से नैसर्गिक मित्रता, शुक्र तथा शनि से शत्रुता और बुध से उदासीनता है।

श्रीसूर्य प्रातः स्मरणम्- प्रातः स्मरामि खलु तत्सवितुर्वरिण्यं रूपं हि मण्डलमृचोऽथ तनुर्यजूंषि। सामानि यस्य किरणाः प्रभवादिहेतुं ब्रह्मा हरात्म कमलक्ष्यमचिन्त्य रूपम्।1।

प्रातर्नमामि तरणिं तनुवाङ्मेनाभि र्ब्रह्मेन्द्र पूर्वकसुरैर्नुतमर्चितं च। वृष्टिप्रमोचन विनिग्रहहेतुभूतं त्रैलोक्यपालनपरं त्रिगुणात्मकं च।2।

प्रातर्भजामि सवितारतनन्तशक्तिं पापौघशत्रुभयरोगहरं परं च। तं सर्वलोक कलनात्मक कालमूर्ति गोकण्ठबन्धन विमोचनमादिदेवम्।3। सूर्य भगवान् के इन तीनों श्लोकों का जो प्रतिदिन प्रातःकाल पाठ करता है वह समस्त व्याधियों से मुक्त होकर सुख प्राप्त करता है।

त्र्यक्षर मंत्र- 'ह्रां ह्रीं सः।'

चर्तुक्षर मंत्र- 'ॐ ह्रीं हंसः।'

षडक्षर मंत्र- 'हं खः खः खोल्काय।'

अष्टाक्षर मंत्र- 'ॐ घृणिः सूर्य आदित्योम्।'

यही अथर्वांगिरस सूर्य मंत्र है। इस सावित्री विद्या का जो प्रतिदिन जप करता है, वह ब्रह्मवेता होता है। सूर्य नारायण की ओर मुख करके जप करने से महाव्याधि से मुक्त हो जाता है। उसका दारिद्रय समाप्त हो जाता है। वह समस्त दोषों से मुक्त हो जाता है। जो महाभाग नित्य त्रिकाल संध्या इस विद्या का जप करता है, वह परम प्रतापी हो जाता है। इसका जप करने से सैकड़ो यज्ञों का फल प्राप्त होता है। जो सूर्यदेवता के हस्त नक्षत्र पर रहते समय अर्थात् आश्विन मास में इसका जप करता है, वह महामृत्यु से मुक्त होकर दीर्घायु होता है।

दशाक्षर सूर्यमंत्र- विनियोग- ॐ अस्य श्रीसूर्य मंत्रस्य भृगु ऋषिः, गायत्री छन्दः, दिवाकरो देवता, ह्रीं बीजम्, श्रीं शक्तिं, दृष्टादृष्ट सर्वाभीष्टफल सिद्धये जपे विनियोगः।

ऋष्यादिन्यास- ॐ भृगु ऋषये नमः शिरसि। गायत्री छन्दसे नमः मुखे। दिवाकर देवतायै नमः हृदि। ह्रीं बीजाय नमः गुह्ये। श्रीं शक्तये नमः पादयो। विनियोगाय नमः सर्वांगे।

करन्यास- ॐ सत्यो तेजोज्वालामणे हुं फट् स्वाहा - अंगुष्ठाभ्यां नमः - हृदयाय नमः।

ॐ ब्रह्मा तेजोज्वालामणे हुं फट् स्वाहा - तर्जनीभ्यां नमः - शिरसे स्वाहा।

ॐ विष्णु ब्रह्मा तेजोज्वालामणे हुं फट् स्वाहा - मध्यमाभ्यां नमः - शिखायै वषट्।

ॐ रुद्र ब्रह्मा तेजोज्वालामणे हुं फट् स्वाहा - अनामिकाभ्यां नमः - कवचाय हुं।

ॐ अग्नि ब्रह्मा तेजोज्वालामणे हुं फट् स्वाहा - कनिष्ठिकाभ्यां नमः - नेत्रत्रयाय वौषट्।

ॐ सर्व तेजोज्वालामणे हुं फट् स्वाहा - करतलकरपृष्ठाभ्यां नमः - अस्त्राय फट्।

ध्यानम्- शोणाम्भोरुह संस्थित त्रिनयनं वेदत्रयी विग्रहं दानाम्भोज युगाभयानि दधतं हस्तैः प्रवालभम्। केयूरांगदहार कंकणधरं कर्णोल्लसत्कुण्डलं लोकोत्पत्ति विनाश पालनकरं सूर्य गुणाब्धिं भजे।1।

रक्ताब्जयुग्माभय दानं हस्तं केयूरहारांगद कुण्डलाढ्यम्। माणिक्यमौलिं दिननाथमीडे बंधूक कांतिं विलसत्त्रिनेत्रम्।2।

मंत्र- 'ॐ ह्रीं घृणिः सूर्य आदित्य श्रीं'

मंत्र सिद्धि हेतु एक लाख एवं पुरश्चरण हेतु दस लाख जप का विधान है। कार्यानुसार होम एवं अन्य पूजा पद्धति का चयन करना चाहिये।

सूर्य वैदिक मंत्र- 'ॐ आकृष्णेन रजसा वर्त्तमानो निवेशयन्नमृतं मर्त्यं च । हिरण्ययेन सविता रथेना देवो याति भुवनानि पश्यन्।।

श्रीसूर्य गायत्री- 'ॐ आदित्याय विद्महे सहस्रकिरणाय धीमहि तन्नः सूर्यः प्रचोदयात्।' अर्थात् हम भगवान् आदित्य को जानते हैं- पूजते हैं, हम सहस्र किरणों से मण्डित भगवान् सूर्यनारायण का ध्यान करते हैं, वे सूर्यदेव हमें प्रेरणा प्रदान करें।

त्रैलोक्य मंगल श्रीसूर्यकवचम्- श्रीसूर्य उवाच- साम्ब साम्ब महाबाहो श्रृणु मे कवचं शुभम्। त्रैलोक्य मंगलं नाम कवचं परमाद्भुतम्।1। यज्ज्ञात्वा मंत्रवित्सम्यक् फलमाप्नोति निश्चितम्। यद्धृत्वा च महादेवो गणनामधिपोऽभवत्।2। पाठनाद् धारणाद् विष्णुः सर्वेषां पालकः सदा। एवमिंद्रादयः सर्वे सर्वैश्वर्यमवाप्नुयुः।3।

विनियोग- ॐ अस्य श्रीसूर्यकवचस्य श्रीब्रह्मा ऋषिः, अनुष्टुप् छन्दः, श्रीसूर्यः देवता, आरोग्य यशो मोक्षार्थे पाठे विनियोगः।

ऋष्यादिन्यास- श्रीब्रह्मा ऋषये नमः शिरसि। अनुष्टुप् छन्दसे नमः मुखे। श्रीसूर्य देवतायै नमः हृदि। आरोग्य यश मोक्षार्थ्ये पाठे विनियोगाय नमः सर्वांगे।

कवच- प्रणवो में शिरः पातु घृणिर्मे पातु भालकम्। सूर्य्योऽव्यान्नयन द्वंदमादित्यः कर्णयुग्मकम्।1।

अष्टाक्षरो महामंत्रः सर्वाभीष्टफलप्रदः। ह्रीं बीजं मे शिखां पातु हृदये भुवनेश्वरः।2।

चन्द्रबीजं विसर्गाढ्यं पातु मे गुह्यदेशकम्। त्र्यक्षरोऽसौ महामंत्र सर्वतंत्रेषु गोपितः।3।

शिवो वह्नि समायुक्तो वामाक्षि बिन्दु भूषितः। एकाक्षरो महामंत्र श्रीसूर्यस्य प्रकीर्तितः।4।

गुह्याद् गुह्यतरो मंत्रो वाञ्छाचिंतामणिः स्मृतः। शीर्षादि पादपर्यन्तं सदापातु मनूत्तमम्।5।

इति ते कथितं दिव्यं त्रिषु लोकेषु दुर्लभम्। श्रीप्रदं कांतिदं नित्यं धनारोग्यविवर्धनम्।6।

कुष्ठादिरोगशमनं महाव्याधि विनाशनम्। त्रिसंध्यं यः पठेन्नित्यमरोगी बलवान्भवेत्।7।

बहुना किमिहोक्तेन यद्यन्मनसि वर्तते। तत्तत्सर्व भवत्येव कवचस्य च धारणात्।8।

भूतप्रेत पिशाचाश्च यक्ष गंधर्व राक्षसाः। ब्रह्म राक्षस वेताला नैव द्रष्टुमपि क्षमाः।9।

दूरादेव पलांयते तस्य संकीर्तनादपि। भूर्जपत्रे समालिख्य रोचनागुरु कुंकुमैः।10।

रविवारे च संक्रांत्यां सप्तम्यां च विशेषतः। धारयेत् साधक श्रेष्ठस्त्रैलोक्यविजयी भवेत्।11।

त्रिलोहमध्यगं कृत्वा धारयेद् दक्षिणेभुजे। शिखायामथवा कंठे सोऽपि सूर्य्यो न संशयः।12।

इति ते कथितं साम्ब त्रैलोक्ये मंगलाधिपम्। कवचं दुर्लभम् लोके तव स्नेहात्प्रकाशितम्।13।

अज्ञात्वा कवचं दिव्यं यो जपेत्सूर्यमुत्तमम्। सिद्धिर्न जायते तस्य कल्पकोशितैरपि।14।

श्रीसूर्यस्तवराज- वसिष्ठ उवाच- स्तुवंस्तत्र ततः साम्बः कृशो धर्मनिसंततः। राजन्नाम सहस्रेण सहस्रांशु दिवाकरम्।1।

खिद्यमानं तु तं दृष्टवा सूर्यः कृष्णात्मजं तदा। स्वप्ने तु दर्शनं दत्त्वा पुनर्वचनमब्रवीत्।2।

श्रीसूर्य उवाच- साम्ब साम्ब महाबाहो श्रृणु जाम्बवतीसुत्। अलं नामसहस्रेण पठ स्तवमिमं शुभम्।3।

यानि नामानि गुह्यानि पवित्राणि शुभानि च। तानि ते कीर्तयिष्याति श्रुत्वा वत्सावधारय।4।

विकर्तनो विवस्वांश्च मार्तण्डो भास्करो रविः। लोकप्रकाशकः श्रीमांल्लोकचक्षुर्ग्रहेश्वरः।5।

लोकसाक्षी त्रिलोकेशः कर्ता हर्ता तमिस्रहा। तपनतापनश्चैव शुचिः सप्ताश्ववाहनः।6।

गभस्तिहस्तो ब्रध्नश्च सर्वदेवनमस्कृतः। एकविंशतिरित्येष स्तव इष्टः सदा मम।7।

देहारोग्यकरश्चैव धनवृद्धियशस्करः। स्तवराज इति ख्यातस्त्रिषु लोकेषु विश्रुतः।8।

य एतेन महाबाहो द्वे संध्ये स्तवनोदये। स्तौति मां प्रणतो भूत्वा सर्वपापै प्रमुच्यते।9।

कायिकं वाचिकं चैव मानसं यच्च दुष्कृतम्। एकज्जाप्येन तत्सर्वं प्रणश्यति न संशयः।10।

पूजितोऽयं महामंत्रः सर्वपापहरः शुभः। एवमुक्त्वा तु भगवान् भास्करो जगदीश्वरः।11।

श्रीसूर्य अष्टोऽत्तर शतनामावलि- ॐ ह्रीं अरुणाय नमः। ॐ ह्रीं शरण्याय नमः। ॐ ह्रीं करुणारस सिंधवे नमः। ॐ ह्रीं असमानबलाय नमः। ॐ ह्रीं आर्तरक्षकाय नमः। ॐ ह्रीं

आदित्याय नमः। ॐ ह्रीं आदिभूताय नमः। ॐ ह्रीं अखिलागमवेदिने नमः। ॐ ह्रीं अच्युताय नमः। ॐ ह्रीं अखिलज्ञाय नमः।10। ॐ ह्रीं अनन्ताय नमः। ॐ ह्रीं इनाय नमः। ॐ ह्रीं विश्वरूपाय नमः। ॐ ह्रीं इज्याय नमः। ॐ ह्रीं इन्द्राय नमः। ॐ ह्रीं भानवे नमः। ॐ ह्रीं इन्दिरामन्दिराप्ताय नमः। ॐ ह्रीं वन्दनीयाय नमः। ॐ ह्रीं ईशाय नमः। ॐ ह्रीं सुप्रसन्नाय नमः।20। ॐ ह्रीं सुशीलाय नमः। ॐ ह्रीं सुवर्चसे नमः। ॐ ह्रीं वसुप्रदाय नमः। ॐ ह्रीं वसवे नमः। ॐ ह्रीं वासुदेवाय नमः। ॐ ह्रीं उज्जवलाय नमः। ॐ ह्रीं उग्ररूपाय नमः। ॐ ह्रीं ऊर्ध्वगाय नमः। ॐ ह्रीं विवस्वते नमः। ॐ ह्रीं उद्यत्किरणजालाय नमः।30। ॐ ह्रीं हृषीकेशाय नमः। ॐ ह्रीं ऊर्जस्वलाय नमः। ॐ ह्रीं वीराय नमः। ॐ ह्रीं निर्जराय नमः। ॐ ह्रीं जयाय नमः। ॐ ह्रीं उरुद्वयभावरूपयुक्त सारथये नमः। ॐ ह्रीं ऋणिबंधाय नमः। ॐ ह्रीं रुग् हन्त्रे नमः। ॐ ह्रीं ऋक्षचक्रचराय नमः। ॐ ह्रीं ऋजुस्वभावचित्ताय नमः।40। ॐ ह्रीं नित्यस्तुत्याय नमः। ॐ ह्रीं ऋकारमातृकावर्ण रूपाय नमः।

ॐ ह्रीं उज्जवलत् तेजसे नमः। ॐ ह्रीं ऋक्षादिनाथमित्राय नमः। ॐ ह्रीं पुष्कराक्षाय नमः। ॐ ह्रीं लुप्तदंताय नमः। ॐ ह्रीं शान्ताय नमः। ॐ ह्रीं कान्तिदाय नमः। ॐ ह्रीं घनाय नमः। ॐ ह्रीं कनत्कनकभूषाय नमः।50। ॐ ह्रीं खद्योताय नमः। ॐ ह्रीं ऊनिताखिल दैत्याय नमः। ॐ ह्रीं सत्यानन्द स्वरूपिणे नमः। ॐ ह्रीं अपवर्गप्रदाय नमः। ॐ ह्रीं आर्तशरण्याय नमः। ॐ ह्रीं एकाकिने नमः। ॐ ह्रीं भगवते नमः। ॐ ह्रीं सृष्टिस्थित्यन्तकारिणे नमः। ॐ ह्रीं गुणात्मने नमः। ॐ ह्रीं घृणिभृते नमः।60। ॐ ह्रीं बृहते नमः। ॐ ह्रीं ब्रह्मणे नमः। ॐ ह्रीं ऐश्वर्यदाय नमः। ॐ ह्रीं शर्वाय नमः। ॐ ह्रीं हरिदश्वाय नमः। ॐ ह्रीं शौरये नमः। ॐ ह्रीं दशदिक् सम्प्रकाशाय नमः। ॐ ह्रीं भक्तवश्याय नमः। ॐ ह्रीं ऊर्जस्कराय नमः। ॐ ह्रीं जयिने नमः।70। ॐ ह्रीं जगदानन्द हेतवे नमः। ॐ ह्रीं जन्ममृत्युजराव्याधि वर्जिताय नमः। ॐ ह्रीं उच्चस्थानसमारूढ़ रथस्थाय नमः। ॐ ह्रीं असुरारये नमः। ॐ ह्रीं कमनीयकराय नमः। ॐ ह्रीं अब्जवल्लभाय नमः। ॐ ह्रीं

अन्तर्बहिःप्रकाशाय नमः। ॐ ह्रीं अचिन्त्याय नमः। ॐ ह्रीं आत्मरूपिणे नमः। ॐ ह्रीं अच्युताय नमः।80। ॐ ह्रीं अमरेशाय नमः। ॐ ह्रीं परस्मै ज्योतिषे नमः। ॐ ह्रीं अहस्कराय नमः। ॐ ह्रीं रवये नमः। ॐ ह्रीं हरये नमः। ॐ ह्रीं परमात्मने नमः। ॐ ह्रीं तरुणाय नमः। ॐ ह्रीं वरेण्याय नमः। ॐ ह्रीं ग्रहाणांपतये नमः। ॐ ह्रीं भास्कराय नमः।90। ॐ ह्रीं आदिमध्यान्तरहिताय नमः। ॐ ह्रीं सौख्यप्रदाय नमः। ॐ ह्रीं सकलजगतांपतये नमः। ॐ ह्रीं सूर्याय नमः। ॐ ह्रीं कवये नमः। ॐ ह्रीं नारायणाय नमः। ॐ ह्रीं परेशाय नमः। ॐ ह्रीं तेजोरूपाय नमः। ॐ ह्रीं श्रीहिरण्यगर्भाय नमः। ॐ ह्रीं सम्पत्कराय नमः।100। ॐ ह्रीं इष्टार्थदाय नमः। ॐ ह्रीं अनुप्रसन्नाय नमः। ॐ ह्रीं श्रीमते नमः। ॐ ह्रीं श्रेयसे नमः। ॐ ह्रीं भक्तकोटिसौख्यप्रदायिने नमः। ॐ ह्रीं निखिलागमवेद्याय नमः। ॐ ह्रीं नित्यानन्दाय नमः। ॐ ह्रीं छायाउषादेवी समेताय नमः।108

आदित्य, भास्कर, भानु, चित्रभानु, विश्वप्रकाशक, तीक्ष्णांशु, मार्तण्ड, सूर्य, प्रभाकर, विभावसु, सहस्त्रांशु और पूषन्- इन बारह नामों का नित्य पवित्र होकर जप करने से मनुष्य समस्त सुखों का प्राप्त करता है।

Books Written by Gurudev Shri Raj Verma ji

- *Divya Mantra Sadhana Evam Siddhi*

- *Shri Baglamukhi Divya Sadhana*